शोध–पत्र

''राजस्थान राज्य के बांरा जिले की सहरिया जनजाति की औपचारिक शिक्षा के प्रति जागरुकता एवं समस्याओं का अध्ययन।''

शोधकर्ता

रामबाबू जाँगिड़

मार्गदर्शिका

डॉ. सावित्री सिंगवाल

आज शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति की महत्ती आवश्यकता बन गई है। जिस प्रकार रोटी, कपड़ा और मकान व्यक्ति की मुख्य आवश्यकता है ठीक वैसे ही वर्तमान में शिक्षा भी जरूरी है। शिक्षा ही व्यक्ति को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का काम कारती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा से जोड़ना अनिवार्य हो गया है। हमारी सरकारें इस ओर प्रयासरत भी है। शिक्षा प्राचीन काल से चली आ रही है। प्राचीन काल में शिक्षा का औपचारिक माध्यम ऋषि आश्रम हुआ करते थे। वर्तमान में यह जगह विद्यालयों ने ले ली है। शिक्षा की आवश्यकता को देखते हुए सरकार द्वारा भी कई प्रयास किए जाते हैं। वर्तमान में शिक्षा का स्तर काफी ऊँचा उठा है, परन्तु फिर भी कई जातियाँ एवं जनजातियाँ ऐसी है जो औपचारिक शिक्षा से काफी दूर है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में जनजातियों की स्थिति को देखें तो स्वतंत्रता के बाद काफी बदलाव आया है फिर भी औपचारिक शिक्षा से जनजातियाँ नहीं जुड़ पाई है।

प्रायः जनजाति शब्द की उत्पत्ति तथा अर्थ के सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं। चूँकि जनजाति प्रायः शहरी सभ्यता से दूर घने जंगलों में, पर्वतों, घाटियों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती है, अतः

सामान्यतः लोग उन्हें आदिवासी समझते हैं जो 'पिछड़े वर्ग' और 'असभ्य मानव समूह' के रूप में एक सामान्य क्षेत्र में निवास करते हुए सामान्य संस्कृति का अनुसरण करते हैं।

मुख्यतः भारतीय जनजातियों के सम्बन्ध में मानवशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों का मत है कि ये नीग्रीटो, प्रोटो आस्ट्रेलियड तथा मंगोलियन प्रजाति के लोग है जो भारतीय परिवेश में सर्वप्रथम विराजित हुए। यह जनजाति समूह धीरे–धीरे उप हिमालय पश्चिमी भागों की पहाड़ियों तथा वनों में मध्य भारत में नर्मदा तथा गोदावरी के बीच तथा दक्षिणी भारत के मुख्य पश्चिमी भागों में बस गए। इसी प्रकार समाजशास्त्रियों एवं मानवशास्त्रियों के दृष्टिकोण से रिजले, लेके, गिर्यसन, सोबरी, मार्टिन तथा ए.बी. ठक्कर ने इन्हें आदिवासी नाम से पुकारा है। पी.एस. धुरिये ने जनजाति समुदाय को तथा कथित आदिवासी अथवा 'पिछड़े हुए हिन्दु' का नाम दिया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवीन संविधान के निर्माण से आदिवासी या जनजाति (Tribal peoples) को संविधान के अनुसार 341 व 342 के उपबन्धों के अन्तर्गत राष्ट्रपति द्वारा जारी किए गए पन्द्रह (15) आदेशों द्वारा अनुसूचित जनजातियों का पृथक–पृथक उल्लेख किया है। राष्ट्रपति द्वारा इन उपर्युक्त धाराओं के अन्तर्गत एक सूची जारी की गई, जिसने समय–समय पर संशोधन भी किया जाता रहा है।

वर्तमान संविधान में अनुच्छेद 342 के आधार पर अनुसूचित जनजाति को वन्य जाति, वनवासी, पहाड़ी लोग, आदिम जाति, आदिवासी आदि नामों से भी जाना जाता है।

जनजाति का अर्थ ऐसे लोगों के समूह से है जिनकी अपनी एक संस्कृति होती है, एक निश्चित भू–भाग पर निवास करते हैं, अपनी ही एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं। विवाह एवं व्यवसाय में कुछ विशेष नियमों की पालना करते हैं। इनके नियम कड़े होते हैं।

जनजाति समुदाय के लिए संविधान में शिक्षा से सम्बन्धित उपबन्ध भी किए गए है। अनुच्छेद 16, 19(5), 23, 29, 164, 330 आदि किन्तु इस समुदाय को अपने अधिकारों की जानकारी ही नही है या कह सकते है कि अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नही है।

निष्कर्ष–:

जनजातीय समाज की शिक्षा की दृष्टि से काफी दयनीय है। भारतीय संविधान में कई प्रकार के औपचारिक शिक्षा के लिए उपबन्ध निर्धारित किए है किन्तु जनजातीय समाज इनसे अनभिज्ञ है। जनजातीय समाज को जागरूकता की अत्यन्त आवश्यकता है। जिससे की वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सके। शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े वर्गो को औपचारिक शिक्षा से जोड़ना शासन के साथ–साथ हम सभी का भी कर्त्तव्य है। किसी समुदाय विशेष को या जो वर्ग अभी भी शिक्षा से वंचित है, उन्है विद्यालयी शिक्षा से जोड़ने की जिम्मेदारी हम सभी की भी है कि ऐसे समुदायों को उपयुक्त जानकारी प्रदान कर जागरूक करें। जो समुदाय अभी भी शिक्षा से वंचित है। ऐसे समुदायों जागरूक करने की सख्त आवश्यकता है। अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि ऐसे समुदायों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए इनको शिक्षित करना बहुत जरूरी है, साथ ही इस प्रकार के समुदाय को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना भी जरूरी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. उदय मान भारतीय समाज और शिक्षा– प्रो मथुरेश पारीक एवं प्रो रजनी शर्मा :शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
2. शिक्षा के मूल सिद्धांत–: डॉ राम शकल पांडे :विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. शिक्षा एवं उदीयमान भारतीय समाज–: डॉ. सरोज शर्मा :श्याम प्रकाशन, जयपुर
4. प्रगतिशील भारत में शिक्षा–: डॉ. उमेश तिवारी :साहित्य प्रकाशन, आगरा

5. बिलासपुर जिले के बैगा जनजाति की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन–: दिनेश कु. चन्द्रा

6. भारत में आदिवासियों की शैक्षिक स्थिति एवं शिक्षक की भूमिका–: प्रशांत भगत, गोपाल कृष्ण ठाकुर